International Journal of Sociology and Humanities

ISSN Print: 2664-8679
ISSN Online: 2664-8687
Impact Factor: RJIF 8.33
IJSH 2026; 8(1): 01-02
www.sociologyjournal.net
Received: 09-11-2025
Accepted: 10-12-2025

Dr. Rakesh Singh
Assistant Professor,
Department of Sociology,
Late. JK College, Gurh, Rewa,
Madhya Pradesh, India

Corresponding Author:
Dr. Rakesh Singh
Assistant Professor,
Department of Sociology,
Late. JK College, Gurh, Rewa,
Madhya Pradesh, India

गोंड जनजातियों की सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना, जीवनशैली और समकालीन परिवर्तन एवं चुनौतियाँ

Rakesh Singh

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26648679.2026.v8.i1a.246

1. प्रस्तावना

गोंड जनजातीय भारतीय समाज का एक महात्वपूर्ण अंग रहा है। सामाजिक जीवन और मानव इतिहास में कभी भी ऐसा समय नही रहा है। और न होगा जिसमें परिवर्तन और चुनौतिया न रही हो। गोंड जनजाति भारत एवं मध्य प्रदेष की प्रमुख आदिवासी जनजातियों में से एक है। और यह जनजातीय जनसंख्या में गोंड जनजाति की एक विशेष पहचान है। यह जनजाति न केवल जनसंख्या के लिहाज से बड़ी है, बल्कि इसकी सांस्कृतिक विविधता, भाषिक विशिष्टता और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी अत्यंत समृद्ध है। यह जनजाति मुख्यतः मध्य भारत के राज्यों जैसे मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओडिशा, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में पाई जाती है। गोंड जनजाति की अपनी विशिष्ट भाषा, संस्कृति, रीति–रिवाज और सामाजिक संरचना है, जो इसे अन्य समुदायों से अलग बनाती है। अतएव जो प्रभाव भारतीय समाज पर पडेगा वही प्रभाव गोंड जनजातीय समाज पर पडेगा। अंतर इतना है कि यह जनजातीय समाज बाहरी समाज के संपर्क में कम होने से इनमें परिवर्तन की गति धीमी रही हैं। यह शोध पत्र गोंड जनजाति की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति एवं समकालीन परिवर्तन एवं चुनौतियों का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

गोंड जनजाति का इतिहास प्रागैतिहासिक काल से जुड़ा माना जाता है। गोंड शब्द की उत्पत्ति कोंड या कुंड से मानी जाती है, जिसका अर्थ होता है की पेड–पौधों से आच्छादित पहाड़ी। है। ऐसा माना जाता है कि गोंड लोग द्रविड़ मूल के हैं, जो दक्षिण भारत से मध्य भारत की ओर आए थे। मध्यकाल में इनका गौरवशाली राज्य गढ़ा–मंडला, चांदा, नागपुर और देवगढ़ में रहा। इन राज्यों ने स्थानीय प्रशासन, सैन्य प्रणाली और कला–संस्कृति में उल्लेखनीय योगदान दिया। गोंड जनजातियों की पचास से अधिक उपषाखाएँ हैं जिनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व, स्थान, बोली और संस्कृतिक सामाजिक कियाकलाप है।

3. सामाजिक संरचना

गोंड समाज पितृसत्तात्मक है। गाँव के मुखिया को मुकद्दम कहा जाता है। मुकद्दम की नियुक्ति परम्परागत तौर पर की जाती है। गोंड समाज वंशात्मक और कुल–आधारित संरचना में संगठित है। समाज में कुलों का महत्वपूर्ण स्थान है। ये कुल मातृवंशीय नहीं बल्कि पितृवंशीय होते हैं। विवाह प्रणाली गोत्र निषेध और बहिर्गोत्रीय विवाह प्रथा है। बहुपत्नी विवाह की परंपरा पहले प्रचलित थी, परंतु अब इसका प्रचलन कम हो गया है। गोंड समाज में पंचायत प्रणाली और परंपरागत न्याय व्यवस्था का विशेष स्थान है।

4. धार्मिक विश्वास और अनुष्ठान

गोंड धर्म में प्रकृति पूजा प्रमुख है। ये धरती माता, जंगल देवता, पेड़–पौधे, नदियाँ, पहाड़, सूरज, चंद्रमा और पूर्वजों की पूजा करते हैं। फरसापेन, भिमालपेन, और बुढादेव इनके प्रमुख देवता हैं। धार्मिक अनुष्ठान सामूहिक होते हैं और इनमें गीत, नृत्य, बलिदान आदि शामिल होते हैं। गोंड धर्म में जादू–टोना और तांत्रिक अनुष्ठानों की भी मान्यता है।

5. भाषा और साहित्य

गोंड जनजाति की प्रमुख भाषा गोंडी है, गोंडी भाषा एक द्रविड़ परिवार की मध्यवर्ती वर्ग की भाषा है,

जिसकी कई उपभाषाएँ हैं। यह बोली जाने वाली, भाषा है। हालांकि शिक्षा और संपर्क के कारण अब अधिकांश गोंड लोग हिंदी, मराठी, तेलुगु और अन्य स्थानीय भाषाओं का भी उपयोग करते हैं। गोंडी भाषा को हाल के वर्षों में इसे लिपिबद्ध करने और शैक्षणिक पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रयास हो रहे हैं। गोंड लोककथाएँ, गीत और मिथक मौखिक साहित्य की समृद्ध परंपरा को दर्शाते हैं।

6. आर्थिक जीवन

गोंड जनजाति मुख्यतः कृषि और वनों पर निर्भर है। गोंड समुदाय का पारंपरिक आर्थिक आधार कृषि, वनोपज संग्रह और पशुपालन है। पारंपरिक झूम खेती और बारी खेती प्रचलित है। गोंड शिकार और मछली पकड़ने जैसे कार्यों में संलग्न रहते हैं। वे महुआ, तेंदूपत्ता, साल बीज, शहद आदि वनों से एकत्र करते हैं। धीरे–धीरे मजदूरी, छोटे उद्योग और सरकारी योजनाओं के माध्यम से इनकी आजीविका में बदलाव आया है। आधुनिक समय में कई गोंड लोग मजदूरी, सरकारी नौकरियों और छोटे व्यापार में भी लगे हैं।

7. सांस्कृतिक जीवन

गोंड जनजाति की सांस्कृतिक पहचान उनके नृत्य, संगीत और चित्रकला (जैसे गोंड पेंटिंग) में स्पष्ट रूप से झलक दिखाई देती है। गोंड के सांस्कृतिक जीवन में नाच, गाना, चित्रकला और लोकनाट्य महत्वपूर्ण हैं। इनके मुख्य त्योहारों में कीरन उत्सव, माही पर्व और पोला महत्वपूर्ण हैं। विवाह, फसल उत्सव और धार्मिक अनुष्ठानों में नृत्य जैसे करमा, सैला, रईना, सुआ प्रमुख हैं। गोंड चित्रकला, जिसे गोंड आर्ट कहते हैं, आज वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त कर चुकी है।

8. गोंड महिलाओं की स्थिति और भूमिका

गोंड समाज में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। वे कृषि, वनोपज संग्रह, घरेलू कार्यों और पारंपरिक ज्ञान में सक्रिय भागीदार हैं। हालाँकि शिक्षा, अज्ञानता, ऋणग्रस्ता, आर्थिक विपन्ना और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, एवं महिला सक्षारता की स्थिति बहुत ही दयनीय बनी हुई हैं और बाल विवाह और लैंगिक असमानता जैसी चुनौतियाँ वर्तमान में अब भी मौजूद हैं।

9. शिक्षा और स्वास्थ्य

शासकीय प्रयासों के बावजूद गोंड समुदाय में शिक्षा की स्थिति अभी भी संतोषजनक नहीं है। प्राथमिक शिक्षा में दाखिला बढ़ा है, लेकिन माध्यमिक और उच्च शिक्षा तक पहुँच सीमित है। स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, कुपोषण और पारंपरिक चिकित्सा पर निर्भरता जैसी समस्याएँ विद्यमान हैं।

10. राजनीतिक भागीदारी

गोंड जनजाति अनुसूचित जनजातियों की सूची में शामिल है और संविधान में प्रदत्त विशेष अधिकार प्राप्त हैं। हाल के वर्षों में गोंड नेताओं की राजनीतिक सक्रियता बढ़ी है। लेकिन, जागरूकता और शिक्षा की कमी के कारण इनकी भागीदारी अब भी सीमित है।

11. समकालीन परिवर्तन और चुनौतियाँ

शिक्षा, शहरीकरण, सरकारी योजनाओं और अनुसूचित जनजाति के दर्जे के कारण गोंड जनजाति में कई सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन आए हैं। हालांकि, इन परिवर्तनों के साथ–साथ पारंपरिक जीवनशैली और संस्कृति में क्षरण भी देखा गया है। भूमंडलीकरण, औद्योगीकरण और विस्थापन जैसे कारकों ने गोंड जीवनशैली को प्रभावित किया है। भूमि का अधिग्रहण, सांस्कृतिक क्षरण, पहचान का संकट, और रोजगार की अनिश्चितता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

चित्र 1: मध्य प्रदेष की, गोंड जनजाति की पारिवारिक जीवन दृष्य।

चित्र 2: मध्य प्रदेष की, गोंड जनजाति की पारिवारिक जीवन दृष्य।

12. निष्कर्ष और सुझाव

गोंड जनजाति भारतीय सांस्कृतिक विविधता का एक महत्वपूर्ण अंग गोंड जनजाति की पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक विरासत एवं अधिकारों की रक्षा की जानी चाहियें और इनके लियें विकास की योजनाओं में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। व्यावसायिक शिक्षा, जौविक खेती, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देना चाहिए। सरकार, गैर–सरकारी संस्थाओं और स्वयं समुदाय की सहभागिता से ही उनके समग्र विकास की दिशा में सार्थक प्रयास किया जाना चाहियें तथा गोंड जनजाति को चहुमुखी विकास के मुख्यधारा से जोड़ा जाए।

संदर्भ सूची

1. मजूमदार और मदान सामाजिक मानव शास्त्र परिचय (हिंदी) संस्करण पृष्ट–232।
2. वर्मा, आर.सी. (1990). भारतीय जनजातियाँ। राष्ट्रीय मानवविज्ञान संग्रहालय।
3. एल्विन, वेरियर (1944). जैम ळवदके व िडपककसम प्दकपंण
4. बघेल डॉ.डी .एस., (2013). समाजषास्त्र, कैलाष पुस्तक सदन भोपाल।
5. Shrma Dr. Shrinath (2013) Tribal Sociolohy.
6. सरकार, सुभाष चंद्र (2015). आदिवासी समाज और संस्कृति।
7. Census of India Reports-Scheduled Tribes Data.
8. Ministry of Tribal Affairs Government of I ndia Reports.
9. गोंड समाज और संस्कृति पर आधारित विभिन्न शोध पत्र और फील्ड रिपोर्ट।
10. इंटरनेट।